| | | | |
|---|---|---|---|
| क्षणितव्यम्, | क्षाणयितव्यम्, | चिक्षणिषितव्यम्, | चङ्क्षणितव्यम्; |
| क्षणनीयम्, | क्षाणनीयम्, | चिक्षणिषणीयम्, | चङ्क्षणनीयम्; |
| क्षाण्यम्, | क्षाण्यम्, | चिक्षणिष्यम्, | चङ्क्षण्यम्; |
| ईषत्क्षणः-दुःक्षणः-सुक्षणः; | | — | — |
| क्षण्यमानः, | क्षाण्यमानः, | चिक्षणिष्यमाणः, | चङ्क्षण्यमानः; |
| क्षाणः, | क्षाणः, | चिक्षणिषः, | चङ्क्षणः; |
| क्षणितुम्, | क्षाणयितुम्, | चिक्षणिषितुम्, | चङ्क्षणितुम्; |
| क्षतिः, [1]क्षन्तिः, | क्षाणना, | चिक्षणिषा, | चङ्क्षणा; |
| क्षणनम्, | क्षाणनम्, | चिक्षणिषणम्, | चङ्क्षणनम्; |
| [2]क्षणित्वा-क्षत्वा, | क्षाणयित्वा, | चिक्षणिषित्वा, | चङ्क्षणित्वा; |
| [3]प्रक्षत्य, | प्रक्षाण्य, | प्रचिक्षणिष्य, | प्रचङ्क्षण्य; |
| क्षाणम् २, | क्षाणम् २, | चिक्षणिषम् २, | चङ्क्षणम् २; |
| क्षणित्वा-क्षत्वा २, | क्षाणयित्वा २, | चिक्षणिषित्वा २, | चङ्क्षणित्वा २. |

## (297) "क्षपि क्षान्त्याम्" (X-चुरादिः-1621. अक. सेट्. उभ.) [अ]

### इदित्करणात् णिचो वैकल्पिकत्वम्।

'क्षम्पेः क्षम्पयति क्षान्त्याम्, प्रेरणे क्षपयेदिति।' (श्लो. 136) इति **देवः**।

क्षम्पकः-म्पिका, चिक्षम्पयिषकः-षिका, [4]क्षम्पकः-म्पिका,
चिक्षम्पिषकः-षिका, [5]चाक्षम्पकः-म्पिका;

---

1. 'न क्तिचि दीर्घश्च' (6-4-39) इति दीर्घोऽनुनासिकलोपश्च निषिध्यते। क्तिजन्तोऽयम्। उपदेशे नान्तोऽयं धातुः। लक्षणवशाण्णकार इति **धातुवृत्त्यादौ** व्यक्तम्। अनुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' (8-4-58) इति परसवर्णः।
2. '**उदितो** वा' (7-2-56) इति क्त्वायामिड्विकल्पः। इडभावपक्षेऽनुनासिकलोपः।
3. 'वा ल्यपि' (6-4-38) इत्यत्र व्यवस्थितविभाषाश्रयणात् नकारस्य नित्यमनुनासिकलोपः। अनन्तरं तुक्।
4. इदित्करणसामर्थ्याण्णिचो वैकल्पिकत्वम्। तेन, णिजभावपक्षे शुद्धात्, सन्नन्तात् यङन्ताच्च रूपाणि लिखितानि।
5. यङन्तात् 'दीर्घोऽकितः' (7-4-83) इत्यभ्यासस्य दीर्घः।

[अ] '**क्षप** प्रेरणे' इति धातुः चुरादावदन्तेऽस्तीति **देवश्लोकादनुमीयते**। **सिद्धान्तकौमुद्यां** तु न दृश्यते।